2024

HINDI

(Honours Core)

Paper : HIN-HC-2016

(आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×10=10

(क) कबीर के पदों और वाणियों का संग्रह किस ग्रंथ में हुआ है?

(ख) कबीरदास के दीक्षा-गुरु कौन थे?

(ग) 'पदावली' के अतिरिक्त विद्यापति द्वारा रचित किसी एक कृति का नामोल्लेख कीजिए।

(घ) जायसी-कृत प्रतिनिधि ग्रंथ का नाम लिखिए।

(ङ) सूरदास किस धारा के कवि हैं?

(च) "सूर ह्वै कै ऐसे घिघियात काहे को है, कछु हरि-लीला बरनन कर।" सूरदास के प्रति यह उक्ति किसने दी थी?

(छ) तुलसीदास की भक्ति-भावना किस भाव की है?

(ज) 'रामचरितमानस' का रचना काल क्या है?

(झ) बिहारी की कीर्ति का प्रमुख आधार क्या है?

(ञ) घनानंद-काव्य की प्रेरणा-शक्ति कौन है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) विद्यापति के पदों में किन विषयों को प्रमुखता दी गई है?

(ख) कबीर की भाषा की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ग) सूर काव्य के प्रधान विषय क्या-क्या हैं?

(घ) "थके नयन रघुपति छवि देखें।
पलकन्हिहूँ परहरी निमेषें॥"
इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

(ङ) "अति सूधो सनेह को मारग है जहँ नेकु सयानप बाँक नहीं" —आशय स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) विद्यापति को 'मैथिल कोकिल' की आख्या क्यों प्राप्त हुई?

(ख) कबीरदास के अनुसार ईश्वर का स्वरूप कैसा है?

(ग) सूरदास की काव्य-भाषा पर एक टिप्पणी लिखिए।

(घ) 'पुष्पवाटिका-प्रसंग' के आधार पर सीता के रूप सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'बिहारी सतसई' की लोकप्रियता के कारण बताइए।

(च) जायसी का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सम्यक् उत्तर दीजिए : 10×4=40

(क) विद्यापति की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

कबीर की साखियों में व्यक्त मानवीय संवेदनाओं पर सोदाहरण विचार कीजिए।

(ख) सूरदास के 'बाल-वर्णन' के महत्त्व का आकलन कीजिए।

अथवा

'पुष्पवाटिका-प्रसंग' की कला-पक्षीय विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

(ग) बिहारी की शृंगार-भावना पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

पठित पदों के आधार पर घनानंद की विरहानुभूति पर आलोकपात कीजिए।

(घ) निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

"या अनुरागी चित्त की, गति समुझै नहिं कोइ।
ज्यों ज्यों बूड़ै स्याम रंग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ॥"

अथवा

"ससि-मुख अंग मलय गिरि बासा।
नागिन साँपि लीन्ह चहुँ पासा॥
ओनई घटा पटी जग छाहाँ।
ससि के सरन लीन्ह जनु राहाँ॥
छपि गै दिनहिं भानु कै दसा।
लेइ निसि नखत चाँद परगसा॥"

★★★